विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष 2561, पौष पूर्णिमा 2 जनवरी, 2018, वर्ष 47, अंक 7

For online Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

अस्सो यथा भद्रो कसानिविट्ठो, आतापिनो संवेगिनो भवाथ।
सद्धाय सीलेन च वीरियेन च, समाधिना धम्मविनिच्छयेन च।
सम्पन्नविज्जाचरणा पतिस्सता, जहिस्सथ दुक्खमिदं अनप्पकं॥

धम्मपदपाळि- १४४, दण्डवग्गो

चाबुक खाये उत्तम घोड़े के समान उद्योगशील और संवेगशील बनो। श्रद्धा, शील, वीर्य, समाधि और धर्म-विनिश्चय से युक्त हो विद्या और आचरण से संपन्न और स्मृतिमान बन इस महान दु:ख(-समूह) का अंत कर सकोगे।

भदंत वेबू सयाडो से विपश्यी साधकों की भेंट

(जनवरी, 1976 में श्री गोयन्काजी के कुछ पाश्चात्य शिष्य (पुराने साधक), सयाजी की पांचवीं पुण्य-तिथि पर, सयाजी के ध्यान केंद्र में ध्यान करने के लिए रंगून (बर्मा) गये थे। उस दौरान वे भदंत वेबू सयाडो से मिले और उनके विचार उन्होंने किसी अनुवादक की सहायता से समझा।)

अनुवादक: ये सब पंद्रह विदेशी स्त्री-पुरुष श्री गोयन्काजी के शिष्य हैं। आज (19 जनवरी, 1976) सयाजी की पांचवीं पुण्य-तिथि है। आज प्रातःकाल पचास भिक्षुओं को नाश्ता दिया गया है और लगभग डेढ़ सौ साधकों को भोज पर आमंत्रित किया गया है। केंद्र पर विपश्यना शिविर करने के लिए इनका आवागमन महीने भर से चल रहा है। ये लोग केवल सात दिन के लिए बर्मा में रह सकते हैं। इसलिए सात दिन ध्यान करके बैंकॉक या कलकत्ता जा कर, यहां वापस आते हैं। इनमें से कुछ लोगों की यह दूसरी यात्रा है। तीसरी यात्रा में और भी अधिक लोग आयेंगे। सयाजी की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में पूरे महीने के लिए ध्यान शिविर का आयोजन हुआ है। ये लोग विभिन्न राष्ट्रों- अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया से आये हैं और एक साधक मलेशिया से।

वेबू सयाडो: यह बिल्कुल हमारे भगवान बुद्ध के समय के जैसा है। तब भी वे सब भगवान बुद्ध के समक्ष एक ही समय आये थे। एक देश से नहीं, एक शहर से नहीं, एक जगह से नहीं, बल्कि विभिन्न देशों और शहरों से-- सभी पारमीसंपन्न लोग भगवान की वंदना करने एक साथ, एक ही जगह भगवान के समक्ष आये थे। मनुष्य हो या देव, कोई भी प्राणी उनकी वंदना करते थकते नहीं थे। प्रसन्न चित्त से उन लोगों ने बड़ी श्रद्धा से उनकी आराधना और साधना की।

सभी जीवों के प्रति असीम प्रेम, दया और करुणा का भाव रखने वाले भगवान बुद्ध ने उन्हें मार्ग दिखाया था। अच्छे और अनुशासनशील शिष्य होने के कारण उन्होंने विनीत होकर उनके उपदेशों का अनुसरण किया और जीवन में उतारा। 'संसार' (जन्म-मरण-चक्र) में हताशा से भटकते, बाहर निकलने का मार्ग ढूंढते हुए वे अब अपनी अंतिम भव-यात्रा तक पहुँचे थे। जिसकी खोज वे संसार-संसरण करते हुए कर रहे थे, उसे अब पा लिया था। ऐसे अनगिनत लोगों ने भगवान के उपदेश के अनुसार चल कर निब्बान (निर्वाण) का साक्षात्कार किया था।

आप लोग भी उन्हीं पुराने जमाने के मुमुक्षुओं की भांति हैं। आप भी वही पाना चाहते हैं जो उन्होंने पाया था। आप में भी वही उदात्त उत्साह और तत्परता है तभी तो ऐसी पावन भूमि पर आ पाये। सभी करणीयों को करते हुए, बिना समय गँवाये यदि धर्म के अनुसार विनम्र और विनीत भाव से यह कठिन साधना करते रहे तो आप लोग जिस पावन जीवन के परम लक्ष्य के लिए प्रयासरत हैं, उसे निस्संदेह अवश्य प्राप्त करेंगे।

क्या मेरी बातें इनकी समझ में आयीं? मुझे तो नहीं लगता।

अनुवादक: शायद एक या दो समझ पाए, भदंत। उन्होंने अमेरिका में थोड़ी-बहुत बर्मी भाषा सीखी थी।

सयाडो: सच, बहुत अच्छा! मुझे खुशी हुई। जो समझते हैं वे भगवान के उपदेशों को दूसरों तक पहुँचा सकते हैं। इस प्रकार कई लोगों को लाभ मिलेगा। है न? तो महानुभाव! यदि आप को बर्मी भाषा और मेरी बात थोड़ी-बहुत भी समझ में आती है तो बहुत काम की है। भगवान की बातों को थोड़ा भी समझ लें तो बहुत लाभ होगा। भगवान के बोले शब्द थोड़े होने पर भी थोड़े नहीं होते। उनका महत्त्व बहुत है।

कुछ है, जिसे पाने का प्रयास करते हुए आप 'संसार' (संसार-चक्र) में भटकते रहे। यदि आप भगवान के उपदेशों को समझेंगे और उनके अनुसार चलेंगे तो उसे प्राप्त कर ही लेंगे जिसकी खोज में आप आये हैं। वह क्या है जिसे आप अभी और हमेशा से चाहते हैं? 'अभी' से मेरा क्या तात्पर्य है? मेरा तात्पर्य है निकटतम वर्तमान, अर्थात यही क्षण।

आप सभी इसी क्षण सुख चाहते हैं; दु:ख से छुटकारा चाहते हैं; है न? और चाहते हैं कि 'संसार' में सुख ही मिले। 'संसार' में संसरण का अर्थ है कि आप हर समय जरा, रोग और मृत्यु के अधीन हैं। इसका मतलब है घोर दु:ख। आप सब जरा, रोग और मृत्यु से भयभीत हैं; हैं कि नहीं? हां, आप डरते हैं, मैं जानता हूं।

वास्तव में आप वहां जाना चाहते हैं, जहां ये दु:ख नहीं हों। एक ऐसा स्वर्ग जहां दु:ख बिल्कुल नहीं हो। जहां जरा, रोग और मृत्यु आदि दु:खों का पूर्ण निरोध हो। संक्षेप में कहें तो 'निब्बान' (निर्वाण) सुख चाहते हैं। यही है जिसके लिए आप प्रयत्न कर रहे हैं। यदि आप विनम्र और विनीत भाव से भगवान के उपदेशों का पालन करेंगे तो अपने लक्ष्य को पा ही लेंगे। है न? वह सफलता, जिसके लिए हमेशा तरसते रहे; उसे पाकर आप अपना कार्य संपन्न कर लेंगे। हो सकता है आप एक छोटे और संक्षिप्त उपदेश से बहुत कम समझ पाये हों। लेकिन आप लगन से उसका पालन करेंगे तो उपलब्धि छोटी नहीं होगी। वह उपलब्धि जिसके लिए आप सदियों से प्रयासरत रहे हैं। तो क्या इस उपलब्धि को छोटी मान लें? कभी नहीं? यह वास्तव में एक महान उपलब्धि है।

उपदेश चाहे जितने ही छोटे और संक्षिप्त क्यों न हों, यदि आप उन्हें अनुभूति से समझ लेंगे और सतर्कता व निरंतरता से उनके अनुसार चलेंगे तो आनंद आपको मिलेगा ही। सारे विश्व का, समस्त मानव-जाति का कल्याण होगा, सारे देव-ब्रह्माओं का कल्याण होगा। उपदेश के छोटे होने पर भी उपलब्धि महान है। आप जो चाहते थे, वह मिल गया। क्या ऐसा नहीं है? बिल्कुल है। तो महानुभाव, आप उस छोटे उपदेश पर चल कर उसका अभ्यास कर सकते हैं? कर सकते हैं न? हां, बहुत अच्छा!

आप लोगों के जैसे ही भगवान बुद्ध के समय भी कई लोग शाश्वत सुख-शांति की खोज में भटक रहे थे। बल्कि यों कहें कि भगवान के आविर्भाव के पहले से ही बहुत लोग इसी खोज में थे। वे कौन थे? आह! आप कह सकते हैं, सारा संसार। लेकिन मैं आपके लिए सारिपुत्त और मोग्गल्लान का एक उदाहरण प्रस्तुत करता हूं। यह उन पावन पुरुषों की जोड़ी है जो आगे चल कर भगवान के प्रमुख शिष्य बने। आप लोग उनकी प्रव्रज्या के बारे में जानते होंगे।

सारिपुत्त और मोग्गलान अमृत-तत्त्व की खोज में पवित्र परिव्राजक का जीवन बिता रहे थे। सारिपुत्त पहले व्यक्ति थे जो भगवान से सबसे पहले 'धम्म' सुनने वाले पंचवर्गीय भिक्षुओं में से एक के संपर्क में आये। परिव्राजक सारिपुत्त ने उन्हें भिक्षाटन करते देखा। उनकी सभी इंद्रियों को सौम्य, शांत और शरीर-वर्ण को स्वच्छ तथा आभापूर्ण देख कर सारिपुत्त तुरंत जान गये कि ये महानुभाव उस ज्ञान मार्ग को अवश्य जानते हैं, जिसकी वे खोज कर रहे हैं।

भिक्षाटन पूरा होने तक सारिपुत्त उनके पीछे-पीछे चले और भोजन करने के लिए उन्हें अकेले छोड़ दिया। भोजन पूरा होने तक वे उचित दूरी पर रह कर प्रतीक्षा करते रहे। उसके बाद उनके पास जाकर अभिवादन करके पूछा कि उनके गुरु कौन हैं और वे क्या 'धम्म' सिखाते हैं?(पिटकों में यह सब है, पर मैं आपको संक्षिप्त विवरण बता रहा हूं।)

उन पावन भिक्षु ने बताया कि वे अपने शास्ता भगवान 'बुद्ध' से प्रव्रजित हुए हैं और उन्हीं के 'धम्म' को मानते हैं। जब सारिपुत्त ने 'धम्म' का वर्णन करने के लिए अनुरोध किया तब उन्होंने कहा, ''मैं अभी-अभी प्रव्रजित होकर 'धम्म-विनय' के संपर्क में आया हूं, अतः आपको पूरा 'धम्म' नहीं सिखा सकता। मैं उसका सार संक्षिप्त रूप में बताता हूं। भगवान इसी शहर में हैं, आप विस्तृत धम्म उन्हीं से सीखें।''

वे पावन भिक्षु वास्तव में अरहंत थे, जो पूरे 'धम्म' को जानते होंगे; लेकिन विनम्रता के कारण उन्होंने कहा कि वे बहुत कम जानते हैं। तब सारिपुत्त- जो आगे चल कर 'धम्म' के सर्वोच्च प्रतिनिधि बने, ने कहा कि वे भगवान के 'धम्म' को थोड़े से शब्दों में अभी सुनना चाहते हैं।

भिक्षु ने उनकी विनती स्वीकार की। उन्होंने उन्हें सिर्फ सार बताया। कितना? इतना छोटा कि वह पूरा एक पद्य-पाद भी नहीं था। जब सारिपुत्त ने धम्म की इस छोटी टिप्पणी को सुना तो कहा, उनके लिए यह पर्याप्त था। क्योंकि उसका थोड़ा भाग सुनते ही वे दोषरहित शुद्ध धर्म को अंतर्मुखी होते ही स्वानुभव से जान गये थे। वह उपदेश बहुत छोटा था पर सारिपुत्त की समझ छोटी नहीं थी। वे धम्म को ठीक से समझ गये थे।

महाशय! अब आप ने भी उतना ही कम समझा है, है न?

ठीक है, परंतु यदि आप भगवान के उपदेश के अनुसार चलेंगे, उनका पालन करेंगे तो आपकी उपलब्धि भी महान होगी।

मैं आपकी भाषा में तो नहीं बोल सकता, लेकिन आप थोड़ा भी समझे हों तो उसे अपने दोस्तों को बताइये। वे भी 'धम्म' के बारे में थोड़ा बहुत जान जायँगे। क्या आप ऐसा करेंगे? मुझे विश्वास है, आप करेंगे।

आप सब ने बहुत-सी पारमियां इकट्ठी की हैं इसीलिए आप भिन्न-भिन्न सुदूर देशों एवं प्रदेशों से यहां आये हैं। यह आपकी पारमी ही है। इसलिए आप एक ही समय, एक साथ यहां आये हैं। यहां आने के बाद आप धम्म के बारे में जानना चाहते हैं। धम्म को सुना और बुद्ध के उपदेशों को सीखा। परंतु मात्र सुनने से ही संतृप्त न हों, बल्कि आप उसका गहन अभ्यास करते हुए दृढ़ता से साधना करें और मार्ग पर चलना प्रारंभ करें। आप आवश्यक 'विरिय' (=वीर्य, प्रयत्न) लगायेंगे तो उसका फल भी अवश्य पायँगे। अभी भी, निःसंदेह आप जानते हैं कि आपको अपनी लगन और प्रयत्न के अनुरूप फल मिल रहा है। है न?

आप सब यहां इसलिए हैं कि आपने इसके लिए आवश्यक पारमियों का समुपार्जन किया है। भगवान ने कहा था कि यदि आप धम्म के साथ रहेंगे और उसके साथ चलेंगे तो आप बुद्ध के बहुत समीप हैं। यद्यपि शरीर से आप उनसे बहुत दूर, विश्व के दूसरे कोने में ही क्यों न रहते हों। दूसरी ओर, आप उनके इतना निकट रहते हों कि उनके चीवर को छू लें, फिरभी उनके उपदेश के अनुसार चलें नहीं, उनके द्वारा बताये गये धम्ममार्ग का अनुपालन नहीं करें तो आप उनसे बहुत दूर हैं।

आप दूर-सुदूर के अमुक-अमुक देशों में रहते हैं, फिर भी आप भगवान के बहुत करीब हैं, उनके साथ ही हैं। और यदि आप उचित विनीतभाव, श्रद्धा और लगन से उनके उपदेशों का पालन करेंगे तो आप अपनी चाहत 'निर्वाण' को पा ही लेंगे। आप उस लक्ष्य को हासिल कर ही लेंगे, जिसके लिए 'संसार' में भटक रहे हैं।

इस मार्ग पर चल कर 'निर्वाण' का साक्षात्कार करने वाले अनगिनत लोग हैं। वैसे ही अलग-अलग देशों से, शहरों से इस पावन भूमि पर एक साथ आने वाले आप सभी पावन जन भी उन्हीं की भांति हैं। यदि आप पर्याप्त 'विरिय' लगा कर विनम्रता और परिश्रम से साधना करेंगे तो आप भी अपने लक्ष्य तक पहुँच ही जायँगे।

क्या आप सभी अवस्थाओं में बिना विराम के साधना कर पाये? चाहे लेटे हों, बैठे हों, चल रहे हों या खड़े हों! क्या आपने इस प्रकार बिना विराम के साधना की? अथवा हर समय कोशिश कर रहे हैं या नहीं?

साधक: (हंसी), नहीं, सातत्य नहीं है।

-- परंतु इस प्रकार 'विरिय' के साथ सतत साधना करना कठिन या मुश्किल नहीं है। इससे कोई पीड़ा भी नहीं होती। (हंसी) यदि आप पूर्ण 'विरिय' के साथ साधना करते हों तो क्या यह आनंददायी नहीं होती?

-- हां, होती है।

-- क्या आप बिना साधना के प्रसन्नता महसूस करेंगे?

-- नहीं।

-- आपको क्या चाहिए, खुशी या गम? (हंसी)

साधक: भंतेजी, हमारी 'समाधि' (ध्यान) हवा में रखे दीपक की लौ की भांति है। प्रयत्न, सजगता और एकाग्रता न हो पाना हमारी समस्या है। हमारी 'समाधि' बहुत दुर्बल है।

-- यदि आप प्रयासरत हैं तो प्रगति ही कर रहे हैं। एकमात्र जरूरी बात यही है कि कोशिश करना नहीं छोड़ें! 'विरिय' के साथ परिश्रमपूर्वक काम करें। आप जानते हैं 'विरिय' क्या है?

साधक: सम्यक प्रयत्न।

-- हां, पुराने समय के आर्य जनों ने 'विरिय' के साथ अविराम साधना किया और उन्हें सुख मिला। यदि आप भी अनवरत सावधानीपूर्वक भगवान के उपदेशों के अनुसार चलेंगे तो आप अपनी उदात्त आकांक्षाओं का फल अवश्य पायँगे। एक ही बात याद रखें कि बिना बाधा के प्रयत्न करें तो सुख तुरंत मिलेगा। आपको बर्मा आये कितने घंटे हुए?

साधक: चौबीस घंटे।

-- जब आप यहां आये, तब से आपने पूरा-पूरा प्रयत्न किया?

साधक: हर घंटे तो नहीं।

-- जिन घंटों में आपने साधना की, उस समय आप खुश नहीं थे?

साधक: खुश थे। परंतु भंतेजी, ध्यान करते-करते कभी-कभी मैं सो जाता हूं। तब मुझे खुशी नहीं होती।

-- परम सुख उसी के अंतर में प्रवेश पा सकता है जो पूरे प्रयत्न से प्रयास करता है। क्या प्रयास मुश्किल है? यदि वह कठिन और बहुत पीड़ादायी न हो तो आप विश्राम न करें, लगातार काम करते ही रहें।

साधक: यदि वह कठिन और पीड़ादायी हो तो?

-- जब आप लगन से साधना करते हैं तो क्या ऐसी अनुभूति होगी जिससे पीड़ा हो?

साधक: साधना करने में पीड़ा हो सकती है लेकिन उसका फल पीड़ादायी नहीं होगा।

-- बिल्कुल ठीक। वीर्य के साथ उद्यम करने का लक्ष्य क्या सुख पाना नहीं? सुख तो अवश्य मिलेगा, तो उद्यम करना क्या पीड़ादायी है?

साधक: पीड़ा तो तब होती है जब हम सो जाते हैं।

-- नींद कब आती है? 'वीर्य' कम होने से कि ज्यादा होने से? आपको चाहिए कि अपने सारे के सारे वीर्य का प्रयोग करें।

साधक: यहां उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति के पास थोड़ा बहुत 'विरिय' है, लेकिन हमेशा नहीं रहता।

-- 'विरिय' प्रत्येक के पास है। उसका कुछ भाग आप भविष्य के लिए बचा कर तो नहीं रख रहे? (हंसी), क्या आप पूरा प्रयत्न कर रहे हैं, जितना आप सचमुच कर सकते हैं?

साधक: मैं हर क्षण ऐसा नहीं कर सकता। कभी-कभी सो जाता हूं।

-- सो जाना 'थिनमिद्ध' (आलस्य, सुस्ती) है। यह कब होता है? 'विरिय' कम होने पर कि ज्यादा होने पर?

साधक: 'विरिय' के कम होने पर।

-- तो क्या अपने मन को नियंत्रित करने के लिए प्रयासरत हैं? यदि आप भगवान बुद्ध के उदात्त उपदेशों के अनुसार चलने के लिए प्रयासरत हैं तो आपको कम 'विरिय' की आवश्यकता है कि ज्यादा?

साधक: बहुत ज्यादा भंतेजी!

-- हां, एक बच्चे को हिमालय पर चढ़ने में ज्यादा समय लगेगा। उसे भरसक प्रयास करना पड़ेगा, फिर भी वह कभी-कभी फिसलता रहेगा। हम सब हिमालय पर चढ़ने का प्रयास करने वाले बच्चों की भांति हैं, इसलिए समय-समय पर फिसलते रहेंगे। जब आप जान जायँ कि गिर रहे हैं तो आपको 'सति' (जागरूकता) के साथ पुनः प्रयत्न करना होगा।

साधक: हमारी 'सति' हवादार कमरे में रखे दीपक की लौ की भांति है। क्या यह कभी स्थिर नहीं होगी?

-- यदि आप बंद कमरे में रहते हैं जहां हवा का प्रवेश नहीं हो सकता तो क्या लौ झिलमिलायेगी? अर्थात आपको उस जगह रहना होगा जहां हवा न जा सके। यानी, व्यवधान कम-से-कम हो।

साधक: हमें वैसी जगह कहां मिलेगी?

-- 'विरिय'! यदि आप दूसरी जगह से यहां आना चाहते हैं तो क्या आपको प्रयास नहीं करना पड़ेगा? अपने आपसे पूछिये, आप यहां जल्दी आना चाहते हैं कि धीरे-धीरे?

साधक: जल्दी।

-- यदि आप जल्दी आना चाहते हैं तो क्या आप धीरे चलेंगे?

साधक: नहीं।

-- जल्दी आना चाहने वालों को कोई धीरे से चलने को कह सकता है? अब आप समझे? आप सबके पास बहुत 'विरिय' है, बहुत; इसलिए आप इतनी दूर से आये हैं। आप उस संपूर्ण 'विरिय' को लगायें। आप उसमें से थोड़ा भी अलग रखेंगे तो क्या शत्रु (थिनमिद्ध) हावी नहीं हो जायगा? यदि संपूर्ण 'विरिय' का उपयोग करेंगे तो फल क्या होगा?

साधक: हमारी आकांक्षाओं की पूर्ति होगी।

-- यदि कोई अपने 'विरिय' के कुछ भाग को अलग रखे बिना, संपूर्ण भाग के साथ साधना करे तो जिस प्रकार पुराने जमाने के आर्यजनों ने अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति की थी, उसी प्रकार आप की कामनाएं भी निश्चित रूप से सच हो जायँगी। आप सब का मंगल हो!

[[— वेबू सयाडो दूसरों से बातें ज्यादा नहीं करते थे; लेकिन मेरे साथ उन्होंने बहुत बातें कीं। उन्होंने कहा था, ''तुम्हारे पास पारमी है। तुम्हें 'सासन' की वृद्धि करनी होगी। याद रखो; 'सासन' की वृद्धि' करने का अर्थ है, किसी को आर्य अष्टांगिक मार्ग पर आरूढ़ करना अर्थात उसे शील समाधि और प्रज्ञा में प्रस्थापित करना। इसी को 'सासन' की वृद्धि कहते हैं। भिक्षुओं को विहार, भोजन, वस्त्र और दवाइयां जैसी जरूरी चीजें देना 'सासन' की सहायता करने के लिए है। यह केवल 'सासनानुकूल' कार्य है, 'सासन' को फैलाना नहीं। तुम्हें तो 'सासन' को फैलाना है। देर मत करो। अभी करो। यदि तुम देर करोगे तो तुम्हारे संपर्क में रहे लोग धर्मलाभ से वंचित होंगे। इसलिए अभी शुरू करो।'' जब मैं स्टेशन वापस आया तो मैंने वहीं, रेल के डिब्बे में उप-स्टेशन मास्टर को सिखाना शुरू कर दिया था, जो मेरे साथ था। तब से मैं ध्यान का आचार्य बना था।]]

— सयाजी ऊ बा खिन

(सयाजी ऊ बा खिन जर्नल (हिंदी) से साभार)

वृहत आंकिक संरक्षणालय केंद्र

विश्व विपश्यना पगोडा परिसर में एक बड़े आंकिक अभिलेखागार या संरक्षणालय केंद्र (Digital Archives Center) की योजना पर काम चल रहा है। इसके लिए अनेक कम्प्युटर, स्कैनर, प्रिंटर तथा सभी प्रकार के सामान रखने हेतु समुचित स्थान आदि पर प्रारंभिक खर्च पच्चीस लाख, तथा परियोजना-संचालन हेतु कार्यकर्ताओं के वेतनादि के लिए लगभग 15-20 लाख वार्षिक खर्च का अनुमान है।

"विपश्यना विशोधन विन्यास" का रजिस्ट्रेशन सेक्शन 35 (1) (3) के अंतर्गत हुआ है, जिससे दानदाताओं को 125 प्रतिशत आयकर की छूट प्राप्त होगी। जो भी साधक-साधिका इस पुण्य में भागीदार बनना चाहें वे निम्न पते पर संपर्क कर सकते हैं-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2.Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, A/c. Office: 022-62427512/ 62427510; Email: audits@globalpagoda.org; Bank Details of VRI -- 'Vipassana Research Institute', Axis Bank Ltd., Sonimur Apartments, Timber Estate, Malad (W), Mumbai - 400064, Branch - Malad (W). Bank A/c No. - 911010004132846; IFSC No.- UTIB0000062; Swift code: AXISINBB062.

प्राथमिक पालि अभ्यास कार्यक्रम

दि. 7 अप्रैल से 22 मई, 2018, योग्यता-- कम-से-कम तीन 10-दिवसीय शिविर, एक सतिपट्ठान शिविर तथा आचार्य की अनुमति के अतिरिक्त 12वीं कक्षा पास होना चाहिए। **आवेदन-पत्र** हेतु लिंक देखें- http://www.vridhamma.org/Theory-And-Practice-Courses. **संपर्क** करें -Email: Mumbai@vridhamma.org **स्थान:**Vipassana Research Institute, Pariyatti Bhavan, Global Vipassana Pagoda Campus, Near Essel World, Gorai Village, Borivali-W, Mumbai - 400 091, Maharashtra, India. Phone: Office : 022-62427560 (9:30AM to 5:30PM), website: http://www.vridhamma.org

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

1. श्री आनंद राज एवं श्रीमती नानी मैजू शाक्य, धम्म निभा (नेपाल) की केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा,
2. श्री मदन तुलाधर, धम्म सूरिय (नेपाल) की केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा,
3. श्री गोपाल दास महर्जन, धर्मशृंग (नेपाल) के केंद्र-आचार्य की सहायता
4. श्री अशोक कर्ण, धम्म तराई (नेपाल) के केंद्र-आचार्य की सहायता

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्री कमल गोयल, धम्म विराट (नेपाल) के केंद्र-आचार्य की सहायता
2. श्रीमती निर्मला पटेल, औरंगाबाद
3. श्री अशोक कर्ण, नेपाल
4. श्री रत्तन सिद्धि, नेपाल
5. श्री तेजमान शाक्य, नेपाल
6. श्री माधव प्रसाद डुंगाना, नेपाल
7. श्री कृष्णदास राजकर्णिकार, नेपाल
8. श्री हेमबज्र शाक्य, नेपाल
9. श्री धर्मराज शाक्य, नेपाल
10. सुश्री नलिनी शाक्य, नेपाल
11. सुश्री शोभा शिल्पकार, नेपाल
12. सुश्री शुभलता श्रेष्ठ, नेपाल

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्रीमती शांता वर्मा, औरंगाबाद
2. श्री रामूभा जिलूभा जडेजा, भावनगर

बाल-शिविर शिक्षक

1. श्री अभिषेक राम, बेंगलुरु
2. श्री अमित पांडे, बेंगलुरु
3. श्रीमती शारदा राजासेकरन, बेंगलुरु
4. Ms. Ampika Kraiam, Thailand
5. Mr Otmar Kuespert, Germany

नाशिक के लिए क्षेत्रीय बाल-शिविर समन्वयक

1. डॉ. राजेंद्र गायकवाड (सहायक आचार्य)

Registered No. NSK/235/2015-2017

'पूज्य माताजी से साक्षात्कार' के कुछ अंश

प्रश्न: सयाजी बर्मी और अंग्रेजी में बोलते थे, लेकिन आप हिंदी बोलती थीं। आप वार्तालाप कैसे करती थीं? उनके प्रवचन कैसे लगते थे?

उत्तर: "सयाजी ज्यादा बात नहीं करते थे। इशारों से वे पूछते और इशारों से मैं जवाब देती और वह काफी था। वे धर्म प्रवचन बहुत संक्षेप में देते थे- सिर्फ पंद्रह से तीस मिनट तक। गोयन्काजी भारतीय साधकों के लिए कुछ पंक्तियों का अनुवाद कर देते। मुख्य बात यह थी कि उन्होंने रास्ता बता दिया कि काम कैसे करना है। फिर तो सिर्फ काम ही करना था।" ...

पूज्य माताजी की दूसरी पुण्यतिथि पर हम भी उनकी तथा सयाजी ऊ बा खिन की भांति 'बात कम, काम ज्यादा' की नीति पर विश्वास करते हुए अपना मंगल साधें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

पगोडा परिसर में धर्मसेवकों तथा साधकों के लिए निःशुल्क आवास-सुविधा की योजना

'एक दिवसीय' महाशिविरों में सुदूर से आने वाले साधकों तथा धर्मसेवकों के लिए रात्रि-विश्राम की समुचित सुविधा हेतु एक 3-4 मंजिले भवन-निर्माण की योजना है। जो भी साधक-साधिका इस पुण्यकार्य में भागीदार होना चाहें, वे कृपया संपर्क करें:- 1. Mr. Derik Pegado, or 2. Sri Bipin Mehta, (details as in Archives Center). Email: audits@globalpagoda.org

पगोडा पर रात भर रोशनी का महत्त्व

पूज्य गुरुजी बार-बार कहा करते थे कि किसी धातु-पगोडा पर रात भर रोशनी रहने का अपना विशेष महत्त्व है। इससे सारा वातावरण धर्म एवं मैत्री-तरंगों से भरपूर रहता है। तदर्थ सगे-संबंधियों की याद में ग्लोबल पगोडा पर रोशनी-दान के लिए प्रति रात्रि रु. 5000/- निर्धारित किये गये हैं। संपर्क- उपरोक्त पते पर...

ग्लोबल पगोडा में सन 2018 के एक-दिवसीय महाशिविर एवं वृहत् संघदान का आयोजन

रविवार, 14 जनवरी, 2018 पूज्य माताजी एवं सयाजी ऊ बा खिन की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में-- **पगोडा** परिसर में प्रातः 10 बजे **वृहत्संघदान** का आयोजन किया जा रहा है। उसके बाद 11 बजे से साधक-साधिकाएं **एक दिवसीय महाशिविर** का लाभ ले सकेंगे। जो भी साधक-साधिका इस पुण्यवर्धक दान-कार्य में भाग लेना चाहते हों, वे कृपया निम्न नाम-पते पर संपर्क करें-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, फोन नं. 022- 62427512 (9:30AM to 5:30PM), Email: audits@globalpagoda.org

रविवार 29 अप्रेल- **बुद्धपूर्णिमा, रविवार** 29 जुलाई- **आषाढ़ी पूर्णिमा, रविवार** 30 सितंबर- **शरद पूर्णिमा** एवं **पूज्य गुरुजी की पुण्य-तिथि** *(29 सितंबर)* के उपलक्ष्य में **एक दिवसीय** महाशिविर होंगे। **समय-** प्रातः 11 बजे से अपराह्न 4 बजे तक। 3 से 4 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और **समग्गानं तपो सुखो-** सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **संपर्क:** 022-28451170, 022-62427544- Extn. no. 9, 82918 94644. (फोन बुकिंग- प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक) Online Regn: www.oneday.globalpagoda.org

दोहे धर्म के

बिन श्रद्धा बिन वीर्य के, न स्मृति नाहि समाधि।
प्रज्ञा कोसों दूर है, मिटे न भव भय व्याधि॥

अज्ञानी मूरख बहुत, प्रज्ञा-हीन अनेक।
प्रज्ञा ज्ञान निधान तो, कोई बिरला एक॥

ज्यों वर्षा का नवल जल, धो देवे वनराय।
त्यों प्रज्ञा का विमल जल, धोये चित्त कषाय॥

पावस ऋतु पर्वत गुहा, चित अंतर्मुख होय।
जागे प्रज्ञा बलवती, सफल साधना होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहति

दूहा धर्म रा

साधक काया थिर करै, राखै चित्त अडोळ।
छण छण जाग्रत रैवतो, गांट्यां लेवै खोल॥

देख देख निज चित्त नै, चित्त कितो वाचाळ?
मौन मौन कर मौन कर, मौनी मुनी निहाल॥

बात बात मँह बात मँह, छण छण बीत्यो जाय।
छण छण रो उपयोग कर, बीत्यो छण नहिं आय॥

काल काल करतो रवै, पड़ै काळ रै फंद।
आज अभी ईं छण जिवै, मुक्त हुवै निरद्वंद॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6,
अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहति

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2561, पौष पूर्णिमा, 2 जनवरी, 2018

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, आजीवन शुल्क रु. 500/-, US $ 100. "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2018-2020

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

DATE OF PRINTING: 15 December, 2018, DATE OF PUBLICATION: 2 January, 2018

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. फैक्स : (02553) 244176
Email: vri_admin@dhamma.net.in;
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org